TEACHER NAME - SURAJ KUMAR

COLLEGE NAME - SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHER EDUCATION SASARAM ROHTASH BIHAR 821115

PAPER - C-4 " LANGUAGE ACROSS THE CURRICULUM "

TOPIC - UNIT-2 भाषा कौशल Language Skill

B.Ed 1st YEAR (2020-2022)

DATE - 13/04/2021

भाषा प्रयोगशाला

- आज के वैज्ञानिक युग में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इलेक्ट्रोनिक्स का उपयोग एक प्रकार से अनिवार्य - सा हो गया है।
- भाषा - प्रयोगशाला भाषा - शिक्षण के क्षेत्र में इलेक्ट्रोनिक्स की उपयोगिता का एक महत्वपूर्ण अंश है।
- भाषा - प्रयोगशाला वस्तुतः भाषा - शिक्षण के क्षेत्र में अन्य शिक्षण - साधनों की भाँति ही एक सहायक मात्र है।
- भाषा प्रयोगशाला एक विशेष कक्ष होता है जो विविध दृश्य - श्रव्य उपकरणों से युक्त होता है।
- इसमें 4 से लेकर 32 तक टेपरिकॉर्डरों का एक क्रमिक व्यवस्थित संयोजन होता है। जिसके माध्यम से छात्र/छात्रा भाषा - अध्ययन के लिए विविध प्रकार के अभ्यास करते हुए भाषा सीखते हैं।
- संकुचित अर्थ में एक ऐसा कमरा भी भाषा प्रयोगशाला कहा जा सकता है जिसमें केवल एक टेपरिकॉर्डर हो और जिसके माध्यम से छात्र/छात्रा भाषा - अभ्यास करते हों।
- वास्तव में भाषा - प्रयोगशाला एक सामान्य कक्षा का प्रेरक रूप है, जहाँ शिक्षार्थी सामान्य कक्षा के अध्ययन के अतिरिक्त समय में टेपित पाठों का श्रवण करते हुए अनुकरण आदि के द्वारा भाषा को व्यवहार के स्तर पर सीखने का अभ्यास करते हैं।

महत्व, लाभ

(1) इसमें छात्र एक सामान्य कक्षा की अपेक्षा अधिक सक्रियता और रुचि के साथ भाग लेते हैं। क्योंकि अधिक स्वभाविक वातावरण में टेपित भाषा - पाठ छात्रों के कानों में बिना बाहरी शोरगुल के सीधे सुनाई पड़ते हैं।

(2) छात्र अपनी आवाज को भी आकर्षक यन्त्र (ईयरफोन) के माध्यम से सुनते हैं।

(3) इसमें पाठ अपने में पूर्ण और स्व - आश्रित होते हैं।

(4) भाषा - प्रयोगशाला में भाषाभ्यास के द्वारा भाषार्जन के लिए उपयुक्त वातावरण - निर्माण की अधिक से सम्भावना रहती है।

(5) धीमी गति वाले शिक्षार्थी द्वारा अन्य छात्रों के अध्ययन में बिना बाधा डालते हुए स्व - गति से अभ्यास करना सम्भव।

⑥ सामान्य कक्षाओं में प्रयुक्त साँचा - अभ्यास की यान्त्रिक प्रक्रिया से शिक्षक को मुक्ति मिल जाती है।

⑦ ~~भाषा~~ प्रयोगशाला - मॉनीटर / आध्यापक की संख्या बढ़ाए बिना ही एक कक्षा को कई समूहों / उपवर्गों / स्तरों में बाँटकर पढ़ाया जाना सम्भव है।

⇒ भाषा- प्रयोगशाला में भाषा के इन पक्षों / कौशलों या अध्यापन / अभ्यास आदि सहजता और सरलता के साथ किया जा सकता है : —

- ध्वनि - भेद बोधन।
- उच्चारण - अनुकरण अभ्यास।
- पदबन्ध - उपवाक्य - वाक्य श्रवण
- बोधन और उच्चारण अभ्यास।
- मुक्त भाषण - श्रवण बोधन और अनुकरण - अभ्यास।
- श्रुतलेख सामग्री - श्रवण
- विविध प्रकार की सामग्री ; (वर्ण, शब्द, पदबन्ध, उपवाक्य, वाक्य, अनुच्छेद, वार्तालाप आदि) का वाचन ; शब्द अर्थ और अन्य सामग्री का बोधन।

* टेपित सामग्री को छात्रों के कानों तक पहुँचाने की तकनीक के आधार पर भाषा-प्रयोगशालाओं के मुख्य 2 प्रकार

1. तारयुक्त भाषा-प्रयोगशाला।
   - इसमें मॉनीटर कन्सोल और छात्र-बूथ के मध्य विद्युत-तारों के माध्यम से ध्वनि का आदान-प्रदान होता है।
   - विद्युत तार या तो जूट-मैटिंग से फर्श पर ढके रहते हैं या भूमिगत रहते हैं या दीवार के सहारे किसी केसिंग के माध्यम से बूथ तक आते हैं।

11. तार-रहित भाषा-प्रयोगशाला।
   - इसमें मॉनीटर कन्सोल और छात्र-बूथ के मध्य ध्वनि का आदान-प्रदान विद्युत तारों के बिना ही होने से छात्र-बूथ-चल स्थिति में रह सकते हैं।

* भाषा-प्रयोगशाला में उपलब्ध विभिन्न उपकरणों के आधार पर भाषा-प्रयोगशालाओं के दो वर्ग बन सकते हैं·

1. श्रव्य भाषा प्रयोगशाला।

11. दृश्य-श्रव्य भाषा प्रयोगशाला।

* श्रवण तथा उच्चारण की निष्क्रियता तथा सक्रियता के आधार पर भाषा प्रयोगशाला 2 प्रकार की होती हैं.

1. श्रव्य-निष्क्रिय भाषा-प्रयोगशाला।
   - इसमें छात्रों को केवल सुनने की सुविधा रहती है।
   - छात्र अपने आकर्षण यन्त्र के माध्यम से मॉनीटर कन्सोल से प्रसारित अथवा अपने बूथ पर लगे या रखे टेपरिकॉर्डर से प्रसारित भाषा-पाठ को केवल सुन सकता है. वह चाहे तो श्रवण के साथ या बाद में अपने सन्तोष के लिए थोड़ा बहुत उच्चारण भी कर सकता है।
   - इसमें अध्यापक और छात्र/छात्रों के मध्य पाठ-प्रसारण के समय कोई वार्तालाप सम्भव नहीं है।

11. श्रव्य सक्रिय भाषा प्रयोग शाला।
   - इसमें छात्र के सुनने के साथ-2 उसके उच्चारण को टेपांकित करने की सुविधा रहती है। शिक्षक या मॉनीटर कन्सोल पर उपलब्ध सुविधा के अनुसार छात्र के उच्चारण को आवश्यकता के अनुरूप समय पर सुनकर उसकी अशुद्धि को सुधार सकता है।

* प्रयोगशाला-संचालन तथा कार्य-प्रणाली के आधार पर भाषा-प्रयोगशालाओं के मुख्य 3 वर्ग बन सकते हैं—

I. केन्द्र-संचालित भाषा-प्रयोगशाला
- इसके एक केन्द्र या मॉनीटर कन्सोल से प्रसारित भाषा-पाठ को छात्र अपने आकर्षक यन्त्र के माध्यम से सुन सकता है।

II. व्यक्ति-संचालित भाषा प्रयोगशाला
- इसमें प्रत्येक छात्र टेप रिकॉर्डर, ईयरफोन के सहारे आवश्यकतानुसार अपना टेप रिकॉर्डर चालू कर स्वतन्त्र रूप में भाषा-पाठ सुन सकता है। और अपने उच्चारण को अपने टेप में टेपांकित कर पुनः सुन सकता है।

III. लघु आकारीय भाषा प्रयोगशाला
- 4, 6, 8, 10 बूथों और मॉनीटर कन्सोल की सुविधा होती है।

* टेपांकित पाठ को परीक्षण और सुधार करते समय ~~इस~~ निम्न बातों को ध्यान देना चाहिए
a. टेपांकित पाठ को अध्यापक/मॉनीटर स्वयं एक दो बार पहले सुन लें और किसी अन्य व्यक्तियों को भी सुनाया जाए और इनकी प्रतिक्रिया जानी जाए।
b. जहाँ-2 टेपांकित सामग्री में अस्पष्टता अथवा बाधा ध्वनि-व्यवधान आ गया हो, उसका समुचित सुधार करने के लिए पुनः टेपांकन की व्यवस्था की जाए।

* भाषा-प्रयोगशाला का संचालन

a. इसकी कार्य-प्रणाली से पूर्णतः परिचित, विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक/मॉनीटर और तकनीशियन द्वारा किया जाना चाहिए।
b. भारत में कई शिक्षा-संस्थाओं, विश्वविद्यालयों ने कई-कई हजार रुपये खर्च करके भाषा प्रयोगशाला की स्थापना तो करा ली हैं। किन्तु उनका सदुपयोग उस मात्रा में नहीं हो पा रहा है जितना कि ~~विदे~~ विदेशों में होता है। इसके कुछ कारण हैं —
- प्रयोगशालाओं के समुचित रख-रखाव की कमी।
- कार्य-प्रणाली से अपरिचित/अपूर्ण परिचित व्यक्तियों के हाथ में इनका संचालन।
- उपयुक्त पाठ-सामग्री का अभाव।

* भाषा प्रयोगशाला विधि के प्रवर्तक – लॉरेन्स एम स्टालूरो एवं डेनियल डेविस (1965)

प्रो० एडविन पैकर – " भाषा प्रयोगशाला वैद्युतिकीय साज सज्जा से युक्त एक शिक्षण कक्ष होता है, जिसका उपयोग भाषाओं में समूह शिक्षण के लिए किया जाता है।

भाषा प्रयोगशाला में आवश्यक उपकरण –

1. श्रवण प्रकोष्ठ (कक्षा कक्ष)
2. दूरभाष (टेलिफोन) – वार्तालाप के लिए,
3. ध्वनिमुद्रणयंत्र (फैक्स)
4. संगणक (कम्प्यूटर)
5. नियन्त्रण प्रकोष्ठ (शिक्षक कक्ष) (monotoring संचालित
6. टेप रिकॉर्डर 7. श्रवणानिक्षक दूरभाष (ईयर फोन)

लक्षण / भाषा प्रयोगशाला की सीमाएँ।

1. छात्र अपनी गति अनुसार पढ़ते हैं।
2. ~~सम्यक्~~ आत्मप्रेरणा मिलती है।
3. बार - बार शुद्ध उच्चारण सुनने से छात्रों का उच्चारण शुद्ध होता है।
4. अधिक खर्चीली है।